केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15					
16					

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे →

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
	U.M.T.-010498 शा.उ.मा.वि.करौंदी 9399749143

☐ + ☐ = ☐

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 2 के अंक | कुल अंक

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 01

(१) उ०= (स) मराठी

(ii) उ०= (ब) भी

(iii) उ०= (अ) 1556

(iv) उ०= (स) दो

(v) उ०- (ब) अर्थालंकार

(vi) उ०= (अ) भगत जी

प्रश्न - 02

(1) उ०= पाठशाला

(ii) उ०= तहलका डाटकाम

(iii) उ०= भार

मध्यप्रदेश

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

(iv) उ= व्यतिरेक

(v) उ= जैनेन्द्र कुमार

(vi) उ= तीन

प्रश्न - 03

B S E

(i) उ= असत्य

(ii) उ= सत्य

(iii) उ= सत्य

(iv) उ= सत्य

(V) उ= सत्य

(vi) उ= असत्य

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 04

(i) यशोधर बाबू - सिल्वर वैडिंग

(ii) अंतरंग साक्षात्कार - डायरी

(iii) हरिवंशराय बच्चन - हालावाद

(iv) प्रगतिवाद - 1936

(v) यशोधरा - खण्डकाव्य

(vi) कथानक - कहानी

(vii) संस्कृत के मूल शब्द - तत्सम

प्रश्न - 05

(i) उ०= आमतौर पर रेडियो नाटक की अवधी 15 - 30 मिनिट की होती है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

(ii) उ०= धर्मवीर भारती

(iii) उ०= शांत रस का स्थायी भाव निर्वेद है।

(iv) उ०= दुनिया रोज बनती है।

(v) उ० लुट्टन सिंह के दो पुत्र थे।

(vi) उ० संकट के पास पहुँचकर उससे बच ~~जाना~~ जाना।

(vii) मुअनजो - दड़ो ।

प्रश्न - 06 (अथवा)

उ०= ~~(1) राम अयोध्या आ गए।~~

~~(ii) ललिता फूलों की एक माला बाजार से लाई।~~

उ०=( ) बालक रोया और चुप हो गया।

(ii) शायद! मयूर वन में नाचता है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 07

उ०= मुअनजो - दड़ो की नगर नियोजन की निम्न विशेषताएँ है —

① यहाँ जल निकासी की अच्छी व्यवस्था थी। नालियाँ ढँकी हुई थी।

② यहाँ की सड़के बहुत चौड़ी थी और ये आड़ी या सीधी थी। घरों के दरवाजे यहाँ नहीं खुलते।

③ कुएँ, स्नानघर आदि की बहुत अच्छी व्यवस्था थी।

प्रश्न - 08

उ०= समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय शैली उल्टा पिरामिड शैली है। इसमें तीन भाग होते है- इन्ट्रो, बॉडी, समापन। इसमें क्लाइमेक्स सबसे ऊपर लिखा जाता है। फिर कम - महत्व की चीजें।

+ =

कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

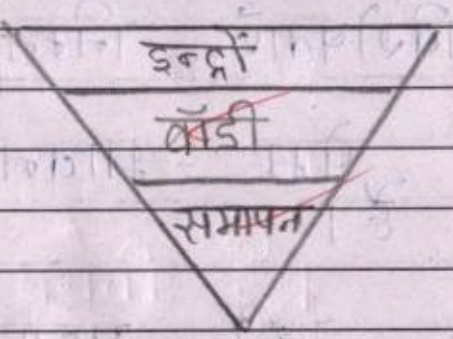

उल्टा पिरामिड शैली

प्रश्न - 09

B
S
E

उ०= बच्चे नीड़ो से इस प्रत्याशा में झांक रहे होंगे कि उनके माता - पिता उनके लिए भोजन लेकर आ रहे होंगे । बच्चे दिन भर से भूखे होंगे और वे अपने माता का इंतजार कर रहे होंगे कि कब वे आए और उन्हें भोजन प्राप्त हो । अर्थात बच्चे अपने माता - पिता की प्रत्याशा में होंगे ।

प्र० - 10 (अथवा)

उ०= प्रयोगवाद के प्रवर्तक अज्ञेय जी हैं ।

योग पूर्व पृष्ठ

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रयोगवाद की विशेषताएँ निम्नलिखित है -

(1) इस युग में प्रेम - भावनाओं का खुला चित्रण हुआ है।

(2) इसमें अहंकार की प्रधानता है।

प्रश्न - 11

उ०=

महाकाव्य	रचनाकार
(1) कामायनी	जयशंकर प्रसाद
(2) रामचरितमानस	तुलसीदास

प्रश्न - 12 (अथवा)

उ०= सहृदय के हृदय में जब उत्साह नामक स्थायी भाव का विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव से संयोग होता है, वहाँ वीर रस होता है।

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 9 के अंक कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उदाहरण : बुंदेले हर बोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी॥

प्रश्न - 13 (अथवा)

उ०= मनुष्य की क्षमता इन तीन बातों पर निर्भर करती है।

① शारीरिक बल : मनुष्य की क्षमता अपने शरीर पर निर्भर करती है।

② सामाजिक उत्तराधिकारी : मनुष्य की क्षमता उसके माता - पिता द्वारा दिए गए संस्कारों पर निर्भर करती है।

③ मनुष्य के अपने प्रयत्नों पर उसकी क्षमता निर्भर करती है।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न – 14

	कहानी	उपन्यास
①	कहानी नायक के जीवन की किसी एक घटना पर आधारित होती है।	उपन्यास नायक के संपूर्ण जीवन पर आधारित होता है।
②	पात्रों की संख्या कम होती है।	पात्रों की संख्या अधिक होती है।
③	उदाहरण – नमक का दारोगा	उदाहरण : गोदान

प्रश्न – 15

उ०= निपात शब्द : वे अव्यय जो किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष बल देते हैं, निपात शब्द कहलाते हैं।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उदाहरण : ① वह पुस्तक भी पढ़ता है।

② उसने मुझे देखा तक नहीं।

'भी' और 'तक' निपात शब्द है।

प्रश्न – 16 (अथवा)

	मुहावरा	लोकोक्ति
①	जब कोई वाक्यांश अपना शाब्दिक अर्थ छोड़कर ~~किस~~ विशेष अर्थ देने लगता है, तब वह मुहावरा कहलाता है।	लोकोक्ति का अर्थ है जनसाधारण में प्रचलित उक्ति।
②	यह एक वाक्यांश होता है।	लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है
③	किसी और वाक्य में जुड़कर अर्थ देता है।	यह स्वतः पूर्ण होती है। किसी और वाक्य का सहारा नहीं लेती।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

(v) उदाहरण : आँख का तारा	उदाहरण : अब पछताए से होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।

प्रश्न - 17

'रघुवीर सहाय'

(i) रचनाएँ - ① सीढ़ियों पर धूप मे
② आत्महत्या के विरुद्ध
③ हँसो - हँसो जल्दी हँसो

(ii) भावपक्ष

समकालीन समाज : सहाय जी के काव्य में समकालीन समाज का यर्थाथ चित्रण हुआ है।

B
S
E

प्रश्न क्र. 4

मध्यवर्गीय चित्रण : सहाय जी ने अपने काव्य में मध्यम वर्ग के लोगों की समस्या का यथार्थ चित्रण किया है।

राजनैतिक व सांस्कृतिक चित्रण : सहाय जी ने समकालीन समाज के राजनैतिक व सांस्कृतिक पक्ष का सजीव अंकन किया है।

भ्रष्टाचार का चित्रण : सहाय जी की रचनाओं में समाज में फैले भ्रष्टाचार का चित्रण किया है। 'आत्महत्या के विरुद्ध' इसका ज्वलंत उदाहरण है।

B S E

कलापक्ष

भाषा : सहाय जी की भाषा सरल, सहज व खड़ी बोली है। उन्होंने तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी आदि शब्दों का प्रयोग किया है।

शैली : सहाय जी की रचनाओं में व्यंग्यात्मक शैली का प्रचुरता से प्रयोग हुआ है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

अलंकार : सहाय जी ने अपनी रचनाओं शब्दालंकार व अर्थालंकार दोनों का प्रयोग किया है। उपमा, उत्प्रेक्षा रूपक, अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।

(iii) साहित्य में स्थान

B S E रघुवीर सहाय जी हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि है। उनकी रचनाओं में पत्रकार के तेवर व अखबारी अनुभव देखने को मिलता है। वे हिन्दी साहित्य के नीलवर्ण आकाश में ध्रुव तारे की समान सदैव चमकते ~~रहेंगे~~ रहेंगे।

प्रश्न - 18

महादेवी वर्मा

रचनाएँ - ① यामा
② आपदा
③ ~~सर~~ नीरजा

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(ii) भाषा - शैली

भाषा : महादेवी वर्मा की भाषा अत्यंत ससक्त है। उन्होंने संस्कृत प्रधान शुद्ध साहित्यिक भाषा को अपनाया है। लोकगीतों के मुखड़ों ने आपकी भाषा को रोचक बना दिया है। इसमें शब्दों द्वारा पात्र के चरित्र को अंकित किया है। इसमें लाक्षणिकता है। शब्दों द्वारा अर्थ को स्पष्ट किया गया है।

शैली : महादेवी वर्मा जी के गद्य मे निम्नलिखित शैली प्रयुक्त हुई है।

(1) भावात्मक शैली : वे रचना करते समय भावुक हो जाती है।

(2) अलंकारिक शैली : उनका गद्य भी पद्य का सुख देता है।

(3) विवेकात्मक शैली : गंभीर विषयों में इस शैली का प्रयोग हुआ है।

BSE

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

B S E

चित्रात्मक शैली : किसी घटना, पात्र के शब्दों द्वारा चित्र अंकित किए गए है। 'गिल्लू' इसका उदाहरण है।

गवेषणात्मक शैली : नारी शिक्षा जैसी समस्या पर विवरण हेतु इस शैली का प्रयोग हुआ है।

साहित्य में स्थान :

महादेवी वर्मा जी ने काव्य और गद्य दोनों में ही अपना विशेष योगदान दिया है। उनका स्थान हिन्दी साहित्य में उच्च है। उन्होंने अपनी रचनाओं से समस्त प्राणियों को प्रेम की डोर से बाँध लिया है। वे मीरा बन हिन्दी साहित्य के नीलवर्ण आकाश में सदैव एक ध्रुव तारे के समान चमकती रहेंगी।

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 19

(i) उ०= राष्ट्र और शौर्यभाव ।

(ii) उ०= राष्ट्रीय भावना में शौर्यभाव का विशिष्ट स्थान है।

(iii) उ० सुदीर्घ - विस्तृत

प्रश्न - 20 (अथवा)

उ०= संदर्भ : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पुस्तक आरोह के भक्तिन पाठ से लिया गया है । इसके रचयिता महादेवी वर्मा है।

प्रसंग : यहाँ पर भक्तिन और उसके पति के बीच के प्रेम व आदर के भाव को बताया गया है।

व्याख्या : महादेवी वर्मा कहती है कि भक्तिन को उसकी जिठानियाँ परेशान करती थी। लेकिन इन सबके बीच उसका पति कभी

BSE

प्रश्न क्र.

उसे मारता नहीं था। उसकी च्च जिठानियां उसके पति को खूब भड़काती लेकिन उसके पति के प्रेम को वे खत्म नहीं कर पाई। उसका पति उससे बहुत प्रेम करता था। च्च जिठानियां भक्तिन की जो भी चुगालियाँ करती, वह उन सब को अनदेखा कर देता। क्योंकि ये सारी चुगालियाँ उसके प्रेम से बढ़कर नहीं थी। इन सब चुगली-चबाई करने की आदतों के कारण भक्तिन की जिठानियों के पति उन्हें बहुत पीटा करते थे। वे दिनभर कुछ काम-धन्धा न करके बस भक्तिन की चुगली करने में लगी रहती थी। इसलिए उनके पति उन्हें मारते थे। लेकिन भक्तिन के पति ने उसे कभी नहीं मारा न ही उसपे कभी हाथ उठाया। अर उसका पति उसका सम्मान किया करता था। वह जानता था कि भक्तिन अपने आदर्श वाले पिता की बेटी है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

विशेष : ① भक्तिन का पति उससे प्रेम व उसका सम्मान करता है।
② 'बात-बात' और पीटी-कूटी, शब्द युग्म का प्रयोग हुआ है।
③ भाषा सरल - सहज व खड़ी बोली है।

प्रश्न - 21

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पुस्तक आरोह के कवितावली (उत्तरकांड) पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता तुलसीदास जी है।

प्रसंग : मनुष्य अपना पेट भरने के लिए विभिन्न कार्य करता है। यहाँ इसका वर्णन किया गया है।

व्याख्या : कवि कहते है इस संसार मे सभी लोग अपना पेट भरने के लिए विभिन्न कार्य करते है। किसान, धन्धा करने वाले, बनिया, भीख माँगने वाले, बाजीगर, नौकर, चोर, आदि अपना पेट भरने के लिए कार्य करते है। कई लोग अपनी भूख मिटाने के लिए पहाड़ों पर

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 20 के अंक = कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

चढ़ते है, जंगलों में शिकार के लिए भटकते है। अपना पेट पालने के लिए मनुष्य ऊँचे - नीचे सारे काम करता है। वह धर्म - अधर्म का भी ~~खयाल~~ ध्यान नहीं करता। मनुष्य अपना पेट भरने के लिए अपने बेटे - बेटी तक को बेच देता है। कवि कहते है कि पेट की आग समुद्र में लगी आग से भी बड़ी होती है। कवि मानते है कि इस आग को ~~केवर~~ केवल राम रूपी बादल ही बुझा सकते है। अर्थात पेट की भूख को सिर्फ राम - नाम के सहारे ही खत्म किया जा सकता है।

विशेष : (1) अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

(2) कवित्त छंद है।

(3) ब्रज भाषा का प्रयोग है।

(4) 'ऊँचे-नीचे', 'धरम - अधरम' जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है।

B
S
E

[ ] + [ ] = [ ]
पृष्ठ ... के अंक   कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.
30=

प्रश्न - 23 (अथवा)

गाँधी नगर, 112003
नई दिल्ली

दिनांक - 06/02/24

प्रिय रमेश,

सप्रेम नमस्कार! मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा है तुम भी वहाँ सकुशल होगे। तुम्हें यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता होगी कि मेरे बड़े भाई की शादी 15 अप्रैल की तय हो चुकी है। मैं जल्द ही तुम्हें निमंत्रण पत्र भेज दूँगा। मैं चाहता हूँ कि तुम यहाँ शादी के 5-10 दिन पहले आ जाओ। हम दोनों अच्छा समय व्यतीत करेंगे। आशा है तुम जरूर आओगे। माता-पिता को प्रणाम व छोटे को प्यार।

तुम्हारा मित्र
अमन

B
S
E

पृष्ठ 22 के अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 22

प्रदूषण का बढ़ता प्रभाव

रूपरेखा :

1. प्रस्तावना
2. प्रदूषण का अर्थ
3. प्रदूषण के कारण
4. प्रदूषण से बचाव
5. उपसंहार

B S E

(1) प्रस्तावना : प्रकृति पृथ्वी का अपूर्व कोश है। इसके माध्यम से ही मानव जीवन का कारवाँ गतिमान है। दुख का विषय यह है कि मानव जीवन के लिए उपयोगी होते हुए भी प्रकृति दिनोदिन प्रदूषित होती जा रही है। मानव अनाप - शनाप धन कमाने की धुन में पर्यावरण के प्रति उदासीन हो गया है। जीवन की जगह मौत दृष्टिगोचर हो रही है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

"पर्यावरण शुद्ध हो, इसका सभी प्रयास करेंगे।
तभी प्रकृति के कोशों का, हम उपभोग करेंगे॥"

② प्रदूषण का अर्थ : वायुमंडल तथा वातावरण में होने वाला विकार की प्रदूषण कहलाता है। प्रदूषण वह परिवर्तन है जो प्राणी मात्र के स्वास्थ्य पर विपरीत असर डालता है। आज का जनजीवन इस विषाक्त हो गया है। त्वचा कैंसर जैसे असाध्य रोग प्रदूषण की ही देन है। नदियों का पानी जहरीला हो गया है। क्योंकि उसमें कैमिकल्स मिला दिए गए है।

B S E

"प्रदूषण है एक बिमारी।
इससे त्रस्त है दुनिया सारी॥"

③ प्रदूषण के कारण : वैज्ञानिक आविष्कार, औद्योगिक प्रगति और बढ़ती हुई जनसंख्या प्रदूषण के मुख्य कारण है। वैज्ञानिक यन्त्रों के माध्यम में पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है।

प्रश्न क्र.

पेट्रोल और डीजल से चलने वाले वाहन प्रतिपल कार्बन - डाई आक्साइड गैस छोड़कर वातावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण भी प्रदूषण बढ़ रहा है।

"पेड़ - पौधे मत करो नष्ट,
साँस लेने में होगा कष्ट"।।

(4) प्रदूषण से बचाव : आज यह अति आवश्यक है कि पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जाए। नदियों की सफाई हेतु अभियान चलाने होंगे। कल - कारखानों ~~के~~ को शहर से स्थानांतरित करना होगा। जन संख्या वृद्धि पर रोक लगानी होगी। वृक्ष लगाने होंगे।

"वृक्ष धरा का आभूषण है।
दूर ये करता प्रदूषण है।।"

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

(5) उपसंहार : आज यह अति आवश्यक हो गया है कि हमारी ~~सह~~ राष्ट्रीय सरकार इस विषय में सचेत हो। सरकार द्वारा वाहनों में ध्वनि नियंत्रण यंत्रों का प्रयोग अनिवार्य कर दिया गया है। प्रदूषण को लेकर कई अभियान चलाए जा रहे है। अतः आज हमें पर्यावरण को शुद्ध, और मानव जीवन के लिए उपयोगी बनाना परमावश्यक है इसी में सबका हित सम्मलित है।

"चलो हाथ मिलाए, आगे आए
प्रदूषण को जड़ से मिटाए।"

"जन जन ने ठाना है,
प्रदूषण मिटाना है।"

BSE